शिवरात्रि कविताएँ

महाशिवरात्रि एवं परमात्मा शिव के अवतरण पर लिखी गयी विशेष कविताएँ

Poems written about Maha Shivratri occasion, and on the decent of the Supreme Father “Shiva” (or Shiv Baba)

Publisher: The Shiv Baba Services Initiative

Main Website: www.shivbabas.org | www.bkgsu.org

BK Google: www.bkgoogle.org *(our Search engine)*

Creator: Brahma Kumaris, Mount Abu

आए हैं भगवान धरा पर...

आए हैं भगवान धरा पर, अब वो जाने वाले हैं
सुन लो प्यारी आत्माओं, वो सचखंड बनाने वाले हैं।

बांसुरी नहीं है फिर भी, मुरली सुनाने आए हैं
राधा न कृष्ण वहां, महारास कराने आए हैं।
कांटों सी इस दुनिया को, मधुबन बनाने वाले हैं
आए हैं भगवान धरा पर, वो स्वर्ग बनाने वाले हैं।

शिव लोटी और बेल-पत्र, शिवरात्रि के वो जागरण
ज्ञान घोट-घोट के वो, हमें नशा चढ़ाने आए हैं।
काम-क्रोध-लोभ-मोह का, सन्यास कराने वाले हैं
अर्थ सहित अब हम सबको, उपवास कराने वाले हैं।

सोमनाथ या महाकाल, महाज्योति या निराकार
अब तक उनको मानते थे हम, अब उनकी मानने वाले हैं।
श्रृंगार हो रहा अब धरा का, हम न हिलने-हिलाने वाले हैं
हस्त बनके हम शिव जी का, शंखनाद कराने वाले हैं।

आए हैं भगवान धरा पर, अब वो जाने वाले हैं
सुन लो प्यारी आत्माओं, वो सचखंड बनाने वाले हैं।

Brahma Kumaris, Mount Abu

शिव परमात्मा का परिचय

अज्ञान रात्रि की उतरन पर, चुपके से आता हूँ
अज्ञान निंद्रा में सोई, हर आत्मा को जगाता हूँ।

सुखी जीवन जीने की, सही विधि सिखाता हूँ
सत्य ज्ञान सुनाकर, नर से नारायण बनाता हूँ।

ज्ञान प्रकाश फैलाकर मैं, अंधियारा मिटाता हूँ
आत्माओं को आत्मा का, मैं ही बोध कराता हूँ।

सारे जग में जमा लेते, जब विकार अपना डेरा
पांच विकारों से छुड़ाता हूँ, यही कर्तव्य है मेरा।

मैं ही आकर करता हूँ, हर समस्या का उन्मूलन
राजयोग सिखाकर लाता हूँ, जीवन में संतुलन।

याद दिलाता हूँ अपने, बच्चों की सत्य पहचान
जागृत करता हूँ सबका, भूला हुआ आत्मभान।

जो मेरे सम्पर्क में आता, वो भूल जाता देहभान
एक पल में होता वो, पांच विकारों से अनजान।

मिलता हूँ अपने बच्चों से, संगमयुग में आकर
घर ले जाता हूँ बच्चों को, पूरा पावन बनाकर।

भेजता हूँ बच्चों को, सतयुगी दैवी साम्राज्य में
पद वैसा ही मिलता, जैसा लिखते हो भाग्य में।

मेरा परिचय जानकर, तुम कर लो यही तैयारी
परमधाम चलने के लिए, बन जाओ निर्विकारी।

ज्ञान-योग के बल से, सम्पूर्ण पावन बन जाओ
दैवी दुनिया सतयुग में जाकर, ऊंचा पद पाओ।

Brahma Kumaris, Mount Abu

महाशिवरात्रि पर्व महान

महाशिवरात्रि है अति शुभ रात्रि, पर्व है यह सर्व महान
सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् द्वारा, प्राणिमात्र का हो कल्याण।
कर्मकाण्ड औपचारिकता ने, आध्यात्मिक सच का लिया स्थान
तब बनते सर्वनाशार्थ अणु बम, संहारक होता विज्ञान।
दोहन अति प्रकृति का करके, क्षरण परत होता ओज़ोन
मौसम असम ताप में वृद्धि, प्राकृतिक आपदा जल-अवसान।
होती जाती ग्लानि धर्म की, बढ़ता जाता पापाचार
धर्म स्थापन हेतु तभी ही, प्रभु-शिव लेते हैं अवतार।
तब शिव-शक्ति से तमस नष्ट कर, शिव हरते हैं अज्ञान
गुण लें अवढरदानी के हम, अवगुण सारे कर दें दान
नूर, डिवाइन लाइट शिव ही, ज्योति स्वरूप वही ओंकार
शिव कल्याण स्वरूप स्वयं हैं, लिंग रूप प्रतिमा आकार।
आशुतोष, विषपायी शिव ही, सब दुर्गुण करते स्वीकार
आओ मोह-मद करें समर्पित, स्व मन बनायें शिव आगार।
वैर-बेर और घृणा-धतूरा, व्यसन रूप भांग भी चढ़ायें
विषय-वासना और पाप के, अक फूल शिव को सौंप के आयें।
संयम रख संकल्प करें हम, अवगुण तज सब गुण अपनायें
संगमयुग में रहें समीप, संग शिव बैठ विचार बनायें।
दिव्यगुणों को धारण करके, सुख-शान्तिमय हो जीवन
कुसंस्कार, आसुरी वृत्ति और काम-क्रोध का कर अर्पण।
किसी की न बुराई देखें, देखें स्व-दुर्गुण ज्ञान-दर्पण में
पवित्रता के पुरूषार्थ द्वारा, करें अशुद्धि सब अर्पण।
कलियुग फिर सतयुग बन जाये, व्यक्ति-व्यक्ति का हो निर्माण
महाशिवरात्रि है अति शुभ रात्रि, पर्व है ये सर्व महान।

Brahma Kumaris, Mount Abu

शिवरात्रि का पर्व सुहाना

परमधाम से नीचे आकर परमात्मा को भूल गए
इस नाटक को हकीकत समझ, इसमें हम उलझ गए।

वो महज़ खेल थे, जो देहधारियों संग रंगमंच पर रिश्ते निभाए
पर खेल के इन चक्करों ने प्रभु पिता से सच्चे रिश्ते भुलाये।

आपकी पहचान प्रभु मालूम ना थी, ना था आपके घर का पता
पर दु:ख में आपको दिल था सदा पुकारा करता
फिर से होती थी उस शांति और आनंद को पाने की तमन्ना
रावण के बंधनों से निकलकर, विकारों से अनजान बालक बनकर
फिर होती थी आपके गोद में जाने की इच्छा।

हमको तो रास्ता मालूम ना था, तब आपका हमारे पास हुआ धरती पे आना
अज्ञान, विकारों की रात खत्म कर, जीवन में सवेरा लाना
इसका ही यादगार है शिवरात्रि का ये पर्व सुहाना!

आपको फिर से पाना, आपका हर हाल में हमें अपनाना
हमें ज्ञान गंगा जल में नहलाना, योग से पावन बनाना
घर वापस ले जाना, स्वर्ग का भी सौगात लाना
ये आत्माओं से परमपिता का मिलन, कितना है सुहाना!

सब बोझ आपको सौंपकर, खुद को हल्का पाना
कोई भविष्य की चिंता नहीं, ना कोई डर व घबराना
खुद की पहचान पाना, आदि-अनादि स्वरूप को जाना
ये सब कुछ संगमयुग का, कितना है सुहाना!

शिवरात्रि का त्योहार

शिवरात्रि का त्योहार आता, परमात्म सन्देश लाता
खुशियों में डांस कराता, उमंग-उत्साह के साथ उड़ना सिखाता।

फूलों की ये बौछार करता, स्नेह-प्यार बरसाता
सारे विश्व में, हर घर में परमात्मा शिव का झंडा लहराता।

पवित्रता का पाठ पढ़ाता, दृढ़ संकल्प कराता
माया रावण पर विजय दिलाता, मायाजीत बनाता।

सबको घर की राह दिखाता, बनकर गाइड हमारा
वो है शिवपिता हमारा, प्यार से जिनको कहते बाबा।

दृष्टि-वृत्ति को श्रेष्ठ बनाता, पतित-पावन दिव्य ज्ञान दाता
सर्व का कल्याणकारी, सबके मन को भाता।

शांति का संदेश देता, सबके मन को हर्षाता
सारे विश्व में लहरा रहा है, मेरे शिवबाबा का झंडा।

मेरा-पन छुड़वाता, संगठन मज़बूत बनाता
लाइट-हाउस बन सारे विश्व में सुख-शांति फैलाता।

शहर-गाँव और गली-गली में फहर रहा झंडा
शिवरात्रि का त्योहार आता, परमात्म सन्देश लाता।

Brahma Kumaris, Mount Abu

शिव भोलेनाथ संगम पर आते

देहभान में आने से माया ने सबक सिखाया
अपनी स्वर्ण ज़ंजीरों से कसकर बांधकर बिठाया
पांच विकारों की चक्की में, सरसों जैसा पिसते
ये बताने शिव भोलेनाथ संगम पर आते।

द्वापर से दु:खी आत्माओं की पुकार सुन शिव आते
सारे दु:खों से मुक्ति की राह संगम पर बताते
याद करो और चक्र चलाओ,
ये दोनों राह दिखाने शिव भोलेनाथ संगम पर आते।

तीव्र करो पुरुषार्थ स्वर्णिम दुनिया जाओगे
पुरुषार्थ में कमी रही तो ऊंच पद ना पाओगे
उस दुनिया में जाने को सभी मनुष्य तरसते
सही राह दिखाने शिव भोलेनाथ संगम पर आते।

परमपिता बच्चों की खातिर स्वर्ग हथेली पर लाते हैं
ज्ञान का सार सुना, पावन हमें बनाते हैं
विश्व का राज्य भाग्य दिलाने
शिव भोलेनाथ संगम पर आते।

Brahma Kumaris, Mount Abu

मिला शिव परमात्मा भगवान

नीले गगन के पार बैठा, शिव परमात्मा मुस्काता
खुद को रूह समझने वाला ही, उससे मिल पाता।

खुशबू सर्व गुणों की, अपने चारों ओर बिखराता
सदा मौन में रहकर भी, वो गीत अलौकिक गाता।

शब्द नहीं उसके गीतों में, निशब्द सदा वो रहता
सबके मन को जानकर, वो खरी बात ही कहता।

सभी दिशाओं में उसका ही, प्रकाश नज़र आता
उसके संग में आकर ही, मन मेरा खिलखिलाता।

शुभ कर्म सिखाकर मुझे, खोले हैं मेरे ज्ञान नयन
उसने ही करवाया मुझसे, आत्म शुद्धि का चयन।

मेरे मन के द्वार पर हुई, शुद्ध संकल्पों की आहट
सबसे हुआ व्यवहार मधुर, मिट गई है कड़वाहट।

सबको लुभाने वाला, जीवन बना है मधुर संगीत
प्यार के सागर से जोड़ी मैंने, जन्म-जन्म की प्रीत।

उसकी गोदी में खेलने वाला, मन मेरा हंस समान
धन्य हुआ जो पाया मैंने, शिव परमात्मा भगवान।

Brahma Kumaris

Mount Abu

अब सतयुग दूर नहीं

क्यों अलबेले हो गये?

काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह ये पाँच विकार हटाओ
ये माया के पैगम्बर हैं, इनको धूल चटाओ।
गये तुम शिव को भूल, ओढ़ चदरिया सो गये
अब सतयुग दूर नहीं, क्यों अलबेले हो गये?

क्षणिक सुखों का भंवर जाल है, उसमें क्यों भरमाया?
स्वार्थ वाले इंसानों ने नोच-नोच कर खाया।
छोड़ शिव हाज़िर हुज़ूर, किन ख्वाबों में खो गये?
अब सतयुग दूर नहीं, क्यों अलबेले हो गये?

पारसनाथ एक शिवबाबा, पारस हमें बनाता
ज्ञानी वह जो तूफानों में तोहफा लेकर आता।
बने वे सिरताज ज़रूर, जो दाग पाप के धो गये
अब सतयुग दूर नहीं, क्यों अलबेले हो गये?

परमपिता शिव शिक्षक, सद्गुरु छोड़ ज्ञान क्यों खोवें?
धर्मराज की मार पड़े, तब सुबक-सुबक कर रोवें।
कहाँ गया तेरा गुरूर, सपने धूमिल हो गये
अब सतयुग दूर नहीं, क्यों अलबेले हो गये?

Brahma Kumaris